॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

स्वस्तिवाचन

विषयसूची

स्वस्तिवाचन.....3

स्वस्तिवाचन

(शुक्ल यजुर्वेद)

सभी शुभ एवं मांगलिक धार्मिक कार्यो को प्रारम्भ करने से पूर्व वेद मन्त्रों का पाठ स्वस्तिपाठ या स्वस्तिवाचन कहलाता है। ऋग्वेद प्रथम मण्डलका यह ८९वाँ सूक्त शुक्लयजुर्वेद वाजसनेयी-संहिता, काण्व संहिता, मैत्रायणी संहिता और ब्राह्मण तथा आरण्यक ग्रन्थों में भी प्राप्त होता है। इस सूक्त के द्रष्टा ऋषि गौतम हैं तथा देवता विश्वेदेव हैं। विश्वेदेव से तात्पर्य इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि विश्व के सभी देवताओं से हैं। मन्त्रद्रष्टा महर्षि गौतम विश्वेदेवों का आवाहन करते हुए उनसे सब प्रकार को निर्विघ्नता तथा मंगल प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।

इस स्वस्तिपाठमें 'स्वस्ति' शब्द आता है, इसीलिये इस सूक्त का पाठ कल्याणकारी सिद्ध है। इस सूक्त में १० ऋचाएँ हैं जिनमे अंतिम दो ऋचाएं में शान्तिदायक दो मन्त्र वर्णित हैं - आधिदैविक, आधिभौतिक तथा आध्यात्मिक - त्रिविध शान्तियोंको प्रदान करनेवाले हैं।

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥

सब ओर से निर्विघ्न, स्वयं रूप, अन्य यज्ञों का उत्थान करने वाले कल्याणकारी यज्ञ हमें प्राप्त हों। सब प्रकार से आलस्यरहित होकर, प्रतिदिन रक्षा करनेवाले देवता सदैव हमारी वृद्धि के लिए प्रयत्नशील हों ॥१॥

देवानां भद्रा सुमतिऋजूयतां देवानांꣳ रातिरभि नो निवर्तताम्।
देवानांꣳ सख्यमुपसेदिमा वयं देवा ने आयुः प्रतिरन्तु जीवसे
॥२॥

यजमान का शुभ चाहने वाले देवताओं की कल्याण कारिणी श्रेष्ठ बुद्धि सदा हमारे साथ रहे, देवताओं का दान हमें प्राप्त हो, हम देवताओं की मित्रता प्राप्त करें, देवता हमारी आयु में वृद्धि करें ॥२॥

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुणꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्
॥३॥

हम वेदरूप सनातन वाणी के द्वारा प्रभुरूप भग, मित्र, अदिति, प्रजापति, अर्यमा, वरुण, चन्द्रमा और अश्विनीकुमारों का आह्वान करते हैं। ऐश्वर्यमयी सरस्वती महावाणी हमें सभी प्रकार के प्रदान करें ॥३॥

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्
॥४॥

वायुदेवता, माता पृथ्वी तथा पिता स्वर्ग हमें सुखकारी औषधियाँ प्रदान करें। सोम का यज्ञ करनेवाले सुखदाता ग्रावा उस अदृश्य औषधरूप को प्रकट करें । हे अश्विनीकुमारों! आप दोनों सबके आधार हैं, हमारी प्रार्थना सुनिये ॥४॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिवमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥५॥

हम स्थावर-जंगम के स्वामी, बुद्धि को सन्तोष देने वाले रुद्र देवता का रक्षा के लिए आह्वान करते हैं। वैदिक ज्ञान एवं धन की रक्षा करनेवाले, पुत्र आदि के पालक, अविनाशी पुष्टिकर्ता देवता हमारी वृद्धि और कल्याण करें ॥५॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥६॥

अत्यधिक कीर्तिवाले ऐश्वर्यशाली इन्द्र हमारा कल्याण करें, सर्वज्ञ, सबके पोषणकर्ता सूर्य हमारा कल्याण करें। जिनकी निर्विघ्न चक्र के समान गति को कोई रोक नहीं सकता, वे गरुड़देव हमारा कल्याण करें। वेदवाणी के अधिपति बृहस्पति हमारा कल्याण करें ॥६॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः।

अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह ॥७॥

रंगबिरंगे वर्ण के घोड़ोंवाले, माता अदिति से उत्पन्न, सबका कल्याण करनेवाले, यज्ञशालाओं में जानेवाले, अग्निरूपी जिह्वा वाले, सर्वज्ञ, सूर्यरूप नेत्रवाले मरुद्गण और विश्वेदेव-देवता हवि रूप अन्न को ग्रहण करने के लिये हमारे इस यज्ञ में पधारें ॥७॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥८॥

हे यजमानों के रक्षक देवताओ ! हम दृढ़ अंगों वाले शरीर से अपने पुत्र, बंधु - बांधवों सहित मिलकर आपकी स्तुति गाते हुए, अपने कानों से कल्याणकारी वचनों का श्रवण करें, नेत्रों से कल्याणमयी वस्तुओं को अवलोकन करें तथा देवताओं की उपासना योग्य आयु प्राप्त करें ॥८॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।
पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः ॥९॥

हे देवताओं ! आप सौ वर्ष की आयुपर्यन्त हमारे समीप बने रहें, जिस आयु में हमारे शरीर को जरावस्था प्राप्त हो, जिस आयु में हमारे पुत्र-पिता अर्थात् पुत्रवान् बन जायँ, हमारी उस गमनशील आयु को आपलोग बीच में खण्डित न होने दें। ॥९॥

अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः।
विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥१०॥

अखण्डित पराशक्ति स्वर्ग है, वही अन्तरिक्षरूप है, वही पराशक्ति माता, पिता और पुत्र भी है। समस्त देवता पराशक्ति के ही स्वरूप हैं, अन्त्यज सहित चारों वर्णो के सभी मनुष्य पराशक्तिमय हैं, जो भूतकाल में उत्पन्न हो चुका है और भविष्य में उत्पन्न होगा, सभी पराशक्ति के ही स्वरूप हैं ॥१०॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ ॐ शान्तिः पृथिवी शान्तिराषः
शान्तिरोषधयः शान्तिः ।
वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥११॥

द्योलोकरूप शान्ति, अन्तरिक्षरूप शान्ति, भूलोकरूप शान्ति, जलरूप शान्ति, ओषधिरूप शान्ति, वनस्पतिरूप शान्ति, सर्वदेवरूप शान्ति, ब्रह्मरूप शान्ति, सर्वजगत्-रूप शान्ति और विश्व में स्वभावतः जो भी शान्ति रहती है, वह अभी शान्ति मुझे परमात्मा की कृपा से प्राप्त हो ॥११॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।
शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥१२॥

हे परमेश्वर ! आप जिस रूप से हमारे कल्याण की चेष्टा करते हैं, उसी प्रकार हमें भय रहित कीजिये। हमारी सन्तानों का कल्याण कीजिये और हमारे पशुओं को भी भयमुक्त कीजिये ॥१२॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।